अपने विचारों
में ताकत रखों,
आवाज में नहीं
क्योंकि फसल बारिश से
होती है बाढ़ से नहीं।
– अज्ञात

हादसे ने पूरी दुनिया को सकते में

कुछ देर बाद ही इस नतीजे पर पहुंचा जा सका कि यह कोई हमला नहीं बल्कि लापरवाही और संयोग के कुछेक ऐसे भीषणतम परिणामों में से एक है, जो आज तक दुनिया की नजर में आए हैं।

नवीन वर्मा।

पश्चिम एशिया के छोटे से देश लेबनान की राजधानी बेरूत में मंगलवार को हुए हादसे ने पूरी दुनिया को सकते में डाल दिया है। बेरूत बंदरगाह पर कुछ मिनटों के अंतराल पर दो धमाके हुए, जिनमें दूसरा इतना भीषण था कि कुछ लोगों को लगा जैसे परमाणु हमला हो गया हो। कुछ देर बाद ही इस नतीजे पर पहुंचा जा सका कि यह कोई हमला नहीं बल्कि लापरवाही और संयोग के कुछेक ऐसे भीषणतम परिणामों में से एक है, जो आज तक दुनिया की नजर में आए हैं।

इस विस्फोट की जमीन अब से सात साल पहले, 2013 में ही तैयार हो गई थी जब लेबनान के कस्टम अधिकारियों ने अमोनियम नाइट्रेट से भरा एक ऐसा रूसी जहाज पकड़ा था, जिसके पास जरूरी कागजात नहीं थे। यह रासायनिक खाद जॉर्जिया से मोजांबीक ले जाई जा रही थी। जहाज के मालिकों ने खुद को दिवालिया बताकर जुर्माना देने से मना कर दिया, लिहाजा जहाज का माल जब्त कर वहीं पोर्ट के गोदाम में रखवा दिया गया था, जहां यह विस्फोटक उर्वरक बरसों से पड़ा था।

हाल में बड़े पैमाने पर पटाखे पोर्ट पर आए, जिनकी उतराई या रख–रखाव के दौरान संभवतः सुरक्षा का पर्याप्त ध्यान नहीं रखा जा सका। 137 से ज्यादा लोगों की जान लेने और 3 अरब डॉलर का तत्क्षण नुकसान करने वाली इस घटना की जांच शुरू हो गई है। जांच रिपोर्ट से ही पता चलेगा कि किस तरह की चूक इसके लिए जिम्मेदार थी, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि कोविड–19 से कम हुई कार्यशक्ति ने पूरी दुनिया में हादसों को आसान बना दिया है।

भारत की बात करें तो अनलॉक प्रक्रिया शुरू होते ही तरह–तरह के औद्योगिक हादसों का सिलसिला चल निकला। जुलाई के पहले हफ्ते में हुई एक स्टडी के मुताबिक मई से उस समय तक देश में 30 से ज्यादा औद्योगिक हादसे हो चुके थे जिनमें 75 लोग मारे गए थे। और यह संख्या सिर्फ उन दुर्घटनाओं की है जिनकी रिपोर्ट की गई। वास्तविक संख्या इससे कहीं ज्यादा होगी।

विशाखापत्तनम के एक पॉलिमर्स प्लांट में 7 मई को जहरीली गैस लीक होने की घटना ने तो भोपाल गैस त्रासदी की याद दिला दी। तमिलनाडु और गुजरात में बॉयलर फटने की घटनाओं ने केवल कंपनी में काम करने वाले मजदूरों के ही जानमाल का नुकसान नहीं किया, आसपास की बस्तियों में भी दहशत फैलाई। असम के तिनसुकिया जिले के एक तेल कुएं में लगी आग उस पूरे इलाके की पारिस्थितिकी के लिए चुनौती बनी हुई है। दुर्घटना को दो महीने बीत जाने के बावजूद तीन मंजिला इमारत जितनी ऊंची लपटें वहां आज भी दिखाई दे रही हैं। ये भयानक नतीजे बता रहे हैं कि बाकी मोर्चों पर अतिरिक्त कीमत चुकाकर भी बंदरगाहों, खदानों और औद्योगिक इकाइयों के संचालन और सुरक्षा में किसी तरह की लापरवाही की गुंजाइश नहीं छोड़ी जानी चाहिए।

आशा रहित बनना

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

इसका संबंध वास्तविकता से नहीं होता। वास्तविकता तो ये है कि अभी आप यहाँ हैं और आपको ये भी नहीं पता कि आप किस कारण से यहाँ हैं, कहाँ से आये हैं और कहाँ जायेंगे ? यही जीवन की वास्तविकता है। कुछ धर्मों ने हमेशा आशा बाँटी है। लेकिन वास्तव में, किसी मनुष्य के लिये अगर सबसे खराब कुछ हो सकता है तो वह है आशा, क्योंकि आशा का अर्थ है कि आप भविष्य की कल्पनाओं में खो जायेंगे, "अभी हालत खराब है लेकिन कोई बात नहीं, मैं अच्छा आदमी हूँ लेकिन गरीब हूँ तो क्या, जब मैं स्वर्ग में जाऊँगा तब भगवान की गोद में बैठूंगा"। यही आशा है। आप को बस अपने आप को ऐसे बनाना है कि आप कोई कल्पनायें न करें, अच्छी या बुरी। आप कोई भगवान या शैतान न बनाएं, स्वर्ग और नर्क, अच्छा और खराब न बनाएं।

संपादकीय

ओल्ड गार्ड ने संभाला मोर्चा

पार्टी में विवाद यहीं नहीं रुके। पार्टी की पिछली कुछ आंतरिक मीटिंग विवादों से भरी रही और वहां सामने आए मतभेद सार्वजनिक मंच तक आए। चाहे राजीव साटव बनाम सीनियर का मामला हो या राहुल गांधी का अपने ही नेताओं से खुलकर नाराज होना, सारी बातें सामने आती गईं। इनके बीच ओल्ड गार्ड ने मोर्चा संभाला। सोनिया गांधी के पुराने सहयोगी नेताओं को लगा कि यही मौका है जब वे राहुल को अपने हिसाब से चीजों को समझाने में सफल हो सकते हैं। लेकिन पिछले तीन–चार सालों के दौरान पार्टी के राहुल युग में नई टीम भी मजबूत हो चुकी थी, जो अपनी जमीन खोना नहीं चाहती। अब असली टकराव का मैदान यही है। पुराने नेताओं ने महसूस किया है कि अभी सर्वश्रेष्ठ समय है जब वे चीजों को अपने हिसाब से तय करें। वे खुलकर बोलने लगे कि राहुल गांधी की टीम राजनीति के हिसाब से बेहद अपरिपक्व है, जो सियासत की बुनियादी समझ तक नहीं रखती है। पार्टी के एक सीनियर नेता ने कहा कि जब सोनिया गांधी पार्टी अध्यक्ष थीं, तो फैसले सीडब्लूसी करती थी, न कि कोई समानांतर टीम। वहीं टीम राहुल का तर्क है कि अगर राहुल गांधी को खुलकर काम नहीं करने दिया जाएगा, तो फिर अध्यक्ष बनने का कोई मतलब नहीं है। पार्टी के नेता मानते हैं कि दोनों के बीच कई मुद्दों पर अलग–अलग राय है और मतभेद की खाई गहरी है, जिसे पाटना बड़ी दुश्वारी का काम है। लेकिन जिस नाटकीय अंदाज से सचिन पायलट की वापसी हो गई है, उसके बाद पार्टी के अंदर सकारात्मक माहौल बना है। पर पार्टी को पता है कि नेतृत्व मसला जब तक नहीं सुलझेगा, तब तक असली संकट सिर्फ टला है, गया नहीं है।

हाल में चर्चा उठी कि शुरुआती हठ के बाद राहुल गांधी दोबारा पार्टी अध्यक्ष के पद पर काबिज होंगे। इसी दिशा में बढ़ते हुए राहुल गांधी और उनके करीबियों ने तैयारियां भी शुरू कीं।

कुछ यूं घिरी यूथ ब्रिगेड

नरेंद्र नाथ

कांग्रेस में नेतृत्व संकट पर लगा ग्रहण छंटने का नाम नहीं ले रहा है। सोनिया गांधी अंतरिम अध्यक्ष की भूमिका तो निभा रही हैं, पर देश की मुख्य विपक्षी पार्टी बिना पूर्णकालिक अध्यक्ष के ही है। हाल में चर्चा उठी कि शुरुआती हठ के बाद राहुल गांधी दोबारा पार्टी अध्यक्ष के पद पर काबिज होंगे। इसी दिशा में बढ़ते हुए राहुल गांधी और उनके करीबियों ने तैयारियां भी शुरू कीं।

संगठन के स्तर पर बदलाव भी दिखा। लेकिन इससे पहले कि यह सब मुकाम तक पहुंच पाता, पार्टी के अंदर फिर वही कहानी दोहराई जाने लगी। पार्टी के अंदर दो धाराओं– जिन्हें यूथ ब्रिग्रेड और ओल्ड गार्ड की संज्ञा दी जा रही है, का आपसी विवाद और गतिरोध फिर सामने आ गया। इस बार यह गतिरोध पार्टी के अंदर से निकलकर सार्वजनिक मंचों पर आया। मामला साफ–साफ बगावत की ओर बढ़ने लगा। इसके बाद पार्टी ने इस संघर्ष पर तत्काल रोक लगाने के लिए नेतृत्व परिवर्तन को टाल दिया और अब पूरी संभावना है कि अगले कुछ समय तक सोनिया गांधी ही पार्टी अध्यक्ष की भूमिका निभाती रहेंगी। चुनाव आयोग के नियम के अनुसार पार्टी को 12 अगस्त से पहले अपना अध्यक्ष चुनना

था। अब पार्टी ने संकेत दिया है कि जब तक दो अलग–अलग धाराओं का संगम नहीं होगा, तब तक पार्टी में नेतृत्व परिवर्तन नहीं होगा। हालांकि सचिन पायलट का मसला सुलझ जाने से इस गहराती खाई को पाटने में मदद जरूर मिलेगी, लेकिन अंदरूनी हलकों से आ रही खबरों के अनुसार अगर इस बार पार्टी में नेतृत्व परिवर्तन होता तो पार्टी दो भागों में टूट सकती थी।

दरअसल जबसे राहुल गांधी का पार्टी पर प्रभाव बढ़ा था, तभी से पुराने कांग्रेसी दिग्गजों की पकड़ कमजोर होने लगी थी। राहुल गांधी ने अध्यक्ष रहते हुए अपने हिसाब से टीम बनाई थी। हालांकि तब भी टीम राहुल की ओर से इस बात पर नाराजगी जताई गई थी कि पुराने नेताओं के अवरोध के कारण राहुल खुलकर अपने फैसले नहीं ले सके। आम चुनाव में करारी हार के बाद जब राहुल गांधी ने इस्तीफा दिया, तब भी पार्टी पर उनकी पकड़ बनी रही। लेकिन पहले ज्योतिरादित्य सिंधिया और फिर बाद में सचिन पायलट के बागी तेवर अपनाने के बाद पुराने नेताओं को मौका मिल गया और वे राहुल गांधी को उनकी गलतियों, खासकर विश्वास करने को लेकर खराब जजमेंट के बारे में बताने लगे। नेताओं ने अपनी बात अखबारों के कॉलम से लेकर पार्टी बैठकों तक में रखी। सोशल मीडिया में भी ये बातें उठाई गईं। राहुल गांधी और उनके करीबियों के लिए यह सब सुनना इसलिए भी मजबूरी थी क्योंकि इनमें सचाई थी। इसके अलावा यह बात भी थी कि कुछ और करीबी नाम अचानक राहुल पर हमलावर हो गए थे और ऐसे में पुराने नेता ही राहुल के बचाव में आए।

पिछले दिनों पार्टी मीटिंग में राहुल गांधी अपने एक करीबी युवा नेता पर भड़क गए थे, जब उनकी ओर से सलाह आई कि कांग्रेस को पीएम मोदी पर सीधा हमलावर नहीं होना चाहिए। राहुल गांधी ने इसके बाद गुस्से में युवा नेताओं से कहा कि वे लड़ना नहीं चाहते हैं। वे बीच में भाग जाते हैं। उनकी बात का प्रियंका गांधी ने भी सपोर्ट किया। उसी मीटिंग में अशोक गहलौत ने राहुल गांधी का सपोर्ट किया और उनसे दोबारा अध्यक्ष पद संभालने को कहा था।

अष्टयोग- 5141

1	2		4		6	
	21	1	36		39	
3		4			1	2
	36		30		26	
5	6		1	2		4
	48	6	32		22	
			4		2	1

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5140 का हल

1	6	7	3	4	2	5
6	32	2	31	3	32	1
2	3	5	1	6	7	4
4	27	4	26	1	39	6
5	1	3	4	2	6	7
7	33	6	32	7	38	3
3	7	1	4	5	6	2

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

काफी संशोधन कर कड़े प्रावधान किए

मोहन। दरअसल आम चुनाव के बाद से ही राहुल गांधी अपने करीबियों के रवैये से दुखी रहे हैं। आम चुनाव के बाद हुई समीक्षा मीटिंग में उन्होंने कहा था कि जब उन्होंने पीछे मुड़कर देखा था, तो वे अकेले खड़े थे। तब भी उनका इशारा खासकर अपने युवा सहयोगियों पर ही था। टीम राहुल के एक बेहद करीबी नेता ने एनबीटी से कहा था कि हालिया घटना से राहुल को यह अहसास हुआ कि दरअसल जिन्हें वह विचारधारा से करीब का नेता मानते थे, वे कभी भी दिल से नहीं जुड़े थे, और सत्ता से बाहर होने के बाद इनमें से अधिकतर नेताओं का सही रंग सामने आ गया।

सूत्रों के अनुसार जब राहुल गांधी का दोबारा अध्यक्ष पद पर चुनाव लगभग तय हो गया था, तो पुराने नेताओं ने शर्त रखी कि वे राहुल गांधी को तो बतौर अध्यक्ष स्वीकार करेंगे, लेकिन उनकी टीम को वे स्वीकार नहीं करेंगे।